मृत्यु के द्वार के आगे क्या है?
अनन्तकालीन्ता के बारे में सच्चाईयाँ

<u>मृत्यु के 'निकट अनुभव'</u>

वर्ष १९७६, में जब मैं इंग्लैण्ड से एशिया जाने की तैयारी कर रहा था मैंने इस बात को जाना कि मुझे कुछ टीके लगवाने थे विभिन्न बीमारियों के विरुद्ध में जो भारत में और अन्य देशों में जहाँ मैं जानेवाला था आम थी। जिस डॉक्टर ने मुझे टीके लगाए उन्होंने मुझे कम से कम २४ घंटों के लिए शराब पीने को मना किया। बाद में उसी रात मैंने कुछ बेवकूफ़ी की (कृपया इसे घर पर न करें) मैंने डॉक्टर की सलाह नहीं मानी। अब मैं ऐसा कह सकता हूँ, ३४ साल पेहले जबसे मैं मसीह का शिष्य बना हूँ जितना मैं बुद्धिमान था अब मैं उससे कहीं ज़्यादा हूँ, लेकिन मेरे किशोरावास्था और शुरूआती बीसवें शतक के जीवन में मेरा जीवन बेकार निर्णयों से भरा हुआ था। इस उमर में मैं बहुत ज़्यादा भाँग, चरस, आदि का सेवन किया करता था, एक रात भी ऐसी नहीं जाती थी कि जिसमें मैं यह सब चीज़ों का उपयोग न करता।
डॉक्टर से मिलने के बाद मैंने अपने लिए शाम की योजना पहले ही बना ली थी। मैं अपने दोस्तों से एक शराबखाने में मिलनेवाला था जो मुझे, मेरी यूरोप और एशिया की यात्रा से पहले विदा करने के लिए इकत्रित थे। बाहर जाने से पहले डॉक्टर की चेतावनी के कारण मैंने अपने आप को बताया मुझे पीना नहीं है। यह एक बुद्धिमानी का निर्णय था लेकिन फिर मैंने सोचा "निश्चित तौर पर थोड़ी सी हशिश से कुछ नुकसान नहीं होगा"। जो हशिश मेरे पास था उसका सिग्रेट की तरह सेवन करने में बहुत देर लग जाती इसलिए मैंने वह खा लिया और फिर अपने मित्रों से मिलने शराबखाने की ओरे चल पड़ा। जैसे ही मैं पहुँचा मेरे दोस्तों ने मेरे लिए एक ग्लास बीयर खरीद दी। मैंने सोचा यह तो थोड़ी सी है, इतनी थोड़ी से मुझे कोई नुकसान नहीं होगा। इसके अलावा मैं अपने दोस्तों को चोट नहीं पहुँचाना चाहता था।
जो हशीश मैने खाया था उसका सचमुच मेरे सोचने की शक्ति पर असर पड़ा था। जैसे ही मैंने शराब पी, मैं अस्वस्थ महसूस करने लगा। मेरे अन्दर जो चल रहा था मैं उस पर नियन्त्रण न रख सका। क्योंकि मैंने टीके लगवाए थे वो हशीश और शराब मेरे लिए अत्याधिक हो गयी और मैं डॉक्टर की चेतावनी के बारे में सोचने लगा। मैं यह जानते हुए शराबखाने से बाहर निकला कि मेरे साथ कुछ बहुत बुरा हो रहा था। मैंने निशच्य किया कि मुझे वापस अपने घर जाना है। किसी तरह से मैं इस बात को जानता था कि मैं मृत्यु के निकट था। मैं लड़खड़ाते हुए अपने कमरे में पहुँचा, सोफ़े पर लेटा और फिर कुछ बहुत अजीब सा हुआ कुछ ऐसा जिसने वह सब कुछ बदल दिया जिस पर मैं उस समय तक यकीन किया करता था। मैंने सचमुच में अपना शरीर त्याग दिया था और कमरे की दूसरी ओर छत से समानान्तर हवा में लटका था और अपने शरीर को देख रहा था। यह कोई दर्शन या स्वप्न नहीं था। यह सच्चाई थी। मेरा शरीर सोफ़े पर था लेकिन मैं उसमें नहीं था। मैं परमेश्वर को पुकारने लगा कि वह मुझ पर दया करे। इस समय तक मैं पूर्ण तरह से नास्तिक था जिसके कोई मसीही संबन्धी या मित्र नहीं थे। मैं सोचता था मैं परमेश्वर में विशवास नहीं करता लेकिन अचानक से मैं ऐसे प्रार्थना कर रहा था जैसे कि यही मेरे लिए एक आखरी उपाय हो।
मेरा ऐसा विशवास था कि मृत्यु ही अन्त है। लेकिन एक्दम से मेरी धार्मिक धारणायें बदल गईं – मैं ऐसे ईश्वर को पुकार रहा था जिसमें मैं विश्वास नहीं करता था। मैंने उससे वादा किया कि यदि वह मुझे जीने देगा तो मैं अपना जीवन उसे दे दूँगा। वह जो भी मुझसे चाहेगा मैं करूँगा। जीवन बहुत बेशकीमती हो गया क्योंकि मैं निश्चित तौर पर नहीं जानता था कि मैं कहाँ जाऊँगा यदि यह आखिरी अनुभव मेरे लिए आखरी

अनुभव था। अचानक से यह अनुभव खत्म हो गया और मैं परमेश्वर के अनुग्रह से जीवित अपने शरीर में लौट आया।

शुरूआती प्रश्न: क्या आपने कभी मृत्यु के निकट का अनुभव किया या आपको किसी करीबी जन को अलविदा कहना पड़ा? एक दूसरे के साथ अपना अनुभव बाँटें।

मृत्यु के साथ मेरा सामना मेरे जीवन की दिशा बदलनेवाला अनुभव था। हालांकि मैंने अपना जीवन मसीह को देने का वादा किया था। परमेश्वर कौन था या उसे कैसे ढूँढें इस विशय में बिलकुल समझ न होने के कारण अगले दिन मैं अपनी प्रतिज्ञा से पीछे हट गया। उस समय जो कुछ मैं जानता था या विश्वास करता था वह था कि इस 'उपग्रह पर जीवन' से भी बढ़कर कुछ और था। मैं इस बात को जान गया था कि जीवन केवल इस माँस कि देह तक सीमित नहीं है। मुझे मृत्यु के बाद जीवन में रूची होने लगी यह समझने की कोशिश करते हुए कि मृत्यु के पश्चात क्या होता है। मुझे ध्यान है कि मैं एक अध्यात्मवादी कलीसिया में गया, यह जानने के लिए कि वह क्या विश्वास करते थे लेकिन मैं वहाँ अन्दर न ज सका। यह इस प्रकार से था जैसे कि दरवाज़े के विरोध में कोई अदृश्य रुकावट है और हर बार मैं भीतर जाने का प्रयत्न करता मेरा ह्दिय तेज़ी से धड़कने लगता और मैं अन्दर प्रवेश नहीं कर पाता। मुझे अध्यात्मवादी और तंत्रमंत्र से बचाने में परमेश्वर बहुत विश्वास्योग्य था।

जब मैं समझ के लिए उस खोज पर था मुझे एक पुस्तक मिली जो उस डॉक्टर द्वारा लिखी गई थी जो अपने कुछ मरीज़ों को मृत्यु के निकट के अनुभवों से वापस ले आया था। पुसतक का नाम था 'जीवन के पश्चात जीवन' (Life after death) जो कि रेमण्ड ए. मूडी एम. डी द्वारा लिखी गई थी। १९७० के दौरान होश में लाने के बहुत से नए यन्त्र बहुत ज़्यादा उपलब्ध होने लगे जिससे बहुत से लोग उन दुर्घटनाओं से भी बचने लगे जो सामान्य रूप से घातक साबित होते। उनके कुछ मरीज़ों ने उन्हें अपनी मृत्यु के निकट के अनुभव बताए। इन मरीज़ों ने जो बाँटा उससे डॉ. मूडी बहुत उत्साहित होकर दूसरे डॉकटरों से बातचीत करने लगे और उन्होंने उन लोगों की एक फ़ाइल बनाई जो मर गए थे और होश में लाए जाने के बाद जीवित हो गए। उन लोगों की बहुत सी रोचक कहानियाँ उनकी पुस्तक में लिखी हुई हैं। इन १५० लोगों के वर्णनों में एक ध्यान देनेवाली समानता है। इन समान विवरणों के आधार पर उन्होंने एक ठेठ सिद्धांतो वाली तसवीर पेश की, इस बारे में कि कोई मृत्यु के निकट क्या अनुभव करेगा:

एक मनुष्य मर रहा है और जैसे ही वह अधिकतम शारीरिक पीड़ा के निकट पहुँचता है वह सुनता है कि उसके डॉकटर ने उसे मृत घोषित कर दिया है। वह तकलीफ़देह शोर सुनने लगता है, वह बहुत तेज़ घंटी बजने की और एक लंबी अंधेरी से जाते हुए महसूस करता है। इसके बाद, वह अचानक से अपने आपको अपनी शारीरिक देह से बाहर पाता है लेकिन फिर भी अपने आस–पास के भौतिक वातावरण को और वह खुद के शरीर को दूर से ऐसे देखता है जैसे वह एक दर्शक हो। वह इस असाधारण खास जगह से अपनेआप को होश में लाने की प्रकिया को देखता है और बहुत ही भावनात्मक संकट की दशा में होता है।

कुछ देर के बाद अपने आपको संभालता है और अपनी विचित्र सी दशा का और आदी हो जाता है। वह ध्यान देता है कि उसके पास अभी भी शरीर है लेकिन जो शारीरिक देह उसने पीछे छोड़ी है उससे बहुत अलग स्वभाव और बहुत ही अलग ताकतों के साथ। जल्द ही कुछ और बातें होने लगती हैं। दूसरे जन उससे

मिलने और उसकी मदद करने को आते हैं। वह उन रिशतेदारों और मित्रों की आत्मा को देख पाता है जो पहले मर चुके हैं। और एक प्रेम और स्नेह से भरपूर आत्मा जिसका सामना उसने पहले कभी नहीं किया जो ज्योति का स्वरूप है उसके सामने आता है। यह स्वरूप बिना बोले उससे एक सवाल पूछता है कि वह अपना जीवन जाँचें और उसके जीवन मे गुज़री मुख्य घटनाओं की झलक दिखाकर उसकी मदद करता है। किसी स्थान पर वह अपने आप को किसी तरह के अवरोध या सीमा की तरफ़ बढ़ता हुआ पाता है जो स्पष्ट तौर पर संसारिक जीवन और अगले जीवन के बीच की सीमा को दर्शाता है। फिर भी, उसे लगता है कि उसे वापस पृथ्वी पर जाना चाहिए क्योंकि उसकी मृत्यु का समय अभी तक नहीं आया। इस समय पर वह रुकने की कोशिश करता है और वापस लौटना नहीं चाहता। वह आनन्द, प्रेम, और शान्ति की महान भावनाओं से सराबोर महसूस करता है। अपने आचरण के बावजूद वह किसी तरह अपनी शरीरिक देह से मिल जाता है और जीता है।

बाद में वह दूसरों को बताने की कोशिश करता है पर ऐसा करने में उसे तकलीफ़ होती है। पहले तो उसे पर्याप्त मानवीय शब्द नहीं मिलते इन असांसारिक घटनाओं को बताने के लिए। वह यह भी पाता है कि दूसरे लोग ठट्टा करते हैं तो वह औरों को बताना बन्द कर देता है। फिर भी यह अनुभव उसके जीवन पर बहुत असर डालता है, विशेषकर उसकी मृत्यु के बारे में सोच और जीवन के साथ उसके सम्बंध पर।

मैं नहीं जानता कि जिस समय रेमण्ड मूडी यह पुस्तक लिख रहे थे वह एक मसीही थे या फिर उनके कोई दूसरे आत्मिक विश्वास थे। वह इस बात को स्पष्ट नहीं करते कि वह सारे लोग जिन्होंने ये अनुभव बताये थे विश्वासी थे या नहीं। उनमें से कुछ थे, परन्तु उनकी पुस्तक के पीछे यह वजह नहीं थी। यह पूरी तरह से वैज्ञानिक दृष्टिकोण से मृत्यु के अनुभव को देखना था।

हाँ, हमें जीवन के पश्चात के विषय में पुस्तकों को सन्देह की दृष्टि से देखना चाहिए क्योंकि यीशु ने हमें बताया कि अन्त के दिनो में बहुत से झूठे भविष्यद्वक्ता दिखाई देंगे। (मत्ती २४:११)। १९९२ में बेट्टी एडी दावा करती हैं कि उन्हें शरीर से बाहर का अनुभव हुआ और उदाहरण के लिए अपनी पुस्तक "एम्ब्रेस्ड बाए द लाईट" में वह दावा करती हैं कि उन्हें बताया गया कि हव्वा परीक्षा में नहीं पड़ी थी परन्तु उसने परमेश्वर के समान बनने के लिए जान–बूझकर यह निर्णय लिया। फिर, एक पुस्तक है "हेवन इज़ फ़ोर रीयल" जहाँ वज़्लेयन पासबान टोड बुर्पो हमें अपने तीन वर्ष के बेटे कोल्टन के स्वर्ग जाने और वहाँ से वापसी की यात्रा के बारे में बताता है। वह दावा करता है कि परमेश्वर जिब्राईल की तरह दिखाई देता है – बस और बड़ा, नीली आँखें, पीले बाल और बहुत बड़े पंखो के साथ, यीशु जिसकी आँखें समुद्री हरी–नीली हैं, भूरे बाल, कोई पंख नहीं लेकिन एक इन्द्रधनुषी रंग के घोड़े के साथ और पवित्र आत्मा जो नीले रंग का है लेकिन मुशकिल से दिखाई देता है। मसीही होने के साथ हमें इस तरह के दावों को सच नहीं मान लेना चाहिए।

व्यक्तिगत तौर पर मैं इस प्रकार की पुस्तकें नहीं पढ़ता क्योंकि परदे की दूसरी ओर जब में वचन में पढ़ता हूँ कि लोग यीशु को देखते थे तो जो उसे देखेते हैं वे आदर से भर जाते हैं और मुर्दे के समान उसके चरणों में गिर जाते हैं। ऐसा ही अनुभव प्राकशितवाक्य की पुस्तक, अध्याय एक, पद सत्रह में प्रेरित यहुन्ना का था। केवल बाईबिल ही वह पुस्तक है जिस पर अनन्तकाल की बातों के लिए हम भरोसा कर सकते हैं। जो वचन में स्पष्ट है वह मैं आपको सीखाने की कोशिश करुँगा।

अनन्तता का विषय हमरे लिए समझने के लिए बहुत विशेष है क्योंकि हमारे प्राणों का बैरी घबराहट उतपन्न करने के लिए मृत्यु के भय का इस्तेमाल करता है जिससे कि हमारे चुनाव करने के निर्णयों पर असर पड़े। मसीह का परिपक्व शिष्य होना इस बात पर निर्भर करता है कि आप आधारभूत वचन आधारित सच्चाईयों को ग्रहण करें जो आपके मसीही जीवन के आरंभ में ही डाली जानी चहिए। उनमें से दो आधारभूत सच्चाईयाँ जिसकी आशा हम करते हैं कि आप अपने जीवन में अपनायेंगे, उसके परिणामस्वरूप, जो आप अगले कुछ हफ़्तों में सीखेंगे इस प्रकार से है:

1 इसलिये आओ मसीह की शिक्षा की आरम्भ की बातों को छोड़ कर, हम सिद्धता की ओर आगे बढ़ते जाएं, और मरे हुए कामों से मन फिराने, और परमेश्वर पर विश्वास करने। 2 और बपतिस्मों और हाथ रखने, और मरे हुओं के जी उठने, और अन्तिम न्याय की शिक्षारूपी नेव, फिर से न डालें। (इब्रानियों ६:१–२) (ज़ोर मैने दिया है)

जो आपने सीखा है यदि उसे आप लागू करेंगे और उन्हें गंभीरता से लेंगे तो ये आरंभिक शिक्षायें आपकी मदद करेंगी कि आप मसीह में परिपक्व हो जाएँ। कुछ बातें जो हम देखेंगे मुश्किल होंगी क्योंकि हम देखेंगे कि यीशु ने नरक और स्वर्ग के बारे में क्या सिखाया। यीशु ने जीवन के पश्चात की ओर बहुत संकेत किया इसलिए यह बहुत आवश्यक है कि जो उसने सिखाया हम उसके बारे में पूरी समझ प्राप्त कर सकें ताकी हम अपने आपको उस दिन के लिए तैयार कर सकें जब हम उसके सम्मुख खड़े होंगे। आज बहुत से लोग इन बातों का ज़िक्र करने के लिए अनिच्छुक हो गए हैं क्योंकि हम ऐसी संस्कृति में रह रहें हैं जहाँ भौतिकवाद राज करता है। केवल वह चीज़ें जिन्हें हम छू और देख सकते हैं सच मानी जाती हैं, और हर वह चीज़ सन्देह से देखी जाती है जो तोली, मापी, छुई या देखी नहीं जा सकती। जो हम देख नहीं सकते उसमें विश्वास कैसे कर सकेते हैं?
यीशु ने अपना जीवन बिलकुल अलग रीति से जिया। वह हमें चुनौती देता है कि हम अपनी आत्मिक आँखों को खोलें और जो जीवन आनेवाला है उसमें छिपे खज़ाने को देखें। यदि हम स्पष्ट रीति से देख सकें और शक की परछाईं से आगे जान लेम कि हम इस जीवन को आनेवाले जीवन की तैयारी के लिए जी रहें हैं तो यह जीवन में हमारे निर्ण्यों को बिलकुल से बदल देगा। हम बुद्धिमान होंगे यदि हम अभी इन बातों पर ध्यान दें जब हमारे पास समय है फ़र्क लाने का, न केवल अपने जीवनों के लिए परन्तु उनके लिए भी जो हमारे आस–पास हैं। यह जीवन काफ़ी समय तक बना रहता है लेकिन अनन्तकाल की तुलना में एक क्षण है और जैसे स्टीफ़न हौकिंग ने एक बार कहा " अनन्तकाल एक बहुत ही लंबा समय है, विशेषकर अन्त की ओर"

१) इस मृत्यु के निकट के अनुभवों के बारे में जो आपने पढ़ा उस विषय में कौन सी बात आपका ध्यान खींचती है?
२) आप क्या सोचते हैं कि आपका जीवन कैसे बदल जाता यदि आपका मृत्यु के निकट का इस तरह का अनुभव करते और आपको अनुमति दी जाती कि आप अपना शेष जीवन जी लें?

<u>क्या बाईबिल सिखाती है कि प्राण सोता है?</u>

कुछ लोग विश्वास करते हैं कि जब एक मसीही मरता है तो उसका प्राण सो जाता है और वह तब तक बेसुध रहता है जब तक यीशु कलीसिया के रैपचर के लिए उसे लेने न आए। बाईबिल में कुछ ऐसे भाग हैं जहाँ यीशु एक मसीही जन की मृत्यु को "नींद" बताता है। लाज़र के सन्दर्भ में मशीह ने उसे मरे हुए में से जिलाया तो कब्र की ओर जाने से पहले जान–बूझकर दो दिन और ठहर गया। (यहुन्ना ११:६) क्या आपने कभी सोचा कि इससे पहले कि वह येरुशलेम की यात्रा पर, लाज़र को जिलाने के लिए जाए यीशु क्यों ठहर गया? यहूदियों की एक प्रथा थी कि एक व्यक्ति का प्राण मरने के तीन दिन बाद तक भी शरीर के आस–पास रह सकता था। यीशु जान–बूझकर ठहरा रहा ताकि वह संदेह करने वालों को यह साबित कर सके कि उसके पास मृत्यु के ऊपर आधिकार है। लाज़र कब्र में सो नहीं रहा था, वह मर गया था।

11 उस ने ये बातें कहीं, और इस के बाद उन से कहने लगा, कि हमारा मित्र लाजर सो गया है, परन्तु मैं
उसे जगाने जाता हूं। 12 तब चेलों ने उस से कहा, हे प्रभु, यदि वह सो गया है, तो बच जाएगा। 13 यीशु
ने तो उस की मृत्यु के विषय में कहा था: परन्तु वे समझे कि उस ने नींद से सो जाने के विषय में
कहा। (यूहन्ना ११:११–१३)

25 यीशु ने उस से कहा, पुनरुत्थान और जीवन मैं ही हूं, जो कोई मुझ पर विश्वास करता है वह यदि मर
भी जाए, तौभी जीएगा। 26 और जो कोई जीवता है, और मुझ पर विश्वास करता है, वह अनन्तकाल तक
न मरेगा, क्या तू इस बात पर विश्वास करती है? (यूहन्ना ११:२५–२६)

"सो रहे" का इस्तमाल मृत्यु की जगह भी किया था जब उसने याईरस की पुत्री को मरे हुओं में से जीवित किया।

49 वह यह कह ही रहा था, कि किसी ने आराधनालय के सरदार के यहां से आकर कहा, तेरी बेटी मर
गई: गुरु को दु:ख न दे। 50 यीशु ने सुनकर उसे उत्तर दिया, मत डर; केवल विश्वास रख; तो वह बच
जाएगी। 51 घर में आकर उस ने पतरस और यूहन्ना और याकूब और लड़की के माता-पिता को छोड़ और
किसी को अपने साथ भीतर आने न दिया। 52 और सब उसके लिये रो पीट रहे थे, परन्तु उस ने कहा;
रोओ मत; वह मरी नहीं परन्तु सो रही है। 53 वे यह जानकर, कि मर गई है, उस की हंसी करने लगे। 54
परन्तु उस ने उसका हाथ पकड़ा, और पुकारकर कहा, हे लड़की उठ! 55 तब उसके प्राण फिर आए और वह
तुरन्त उठी; फिर उस ने आज्ञा दी, कि उसे कुछ खाने को दिया जाए। 56 उसके माता-पिता चकित हुए,
परन्तु उस ने उन्हें चिताया, कि यह जो हुआ है, किसी से न कहना॥ (लूका ८:४९–५६)

३) इस भाग से हमे मृत्यु के विषय में क्या सीख सकते हैं? क्या चीज़ें आपको स्पष्ट दिखाई देती हैं?

मसीह में विश्वास करनेवाला कभी नहीं मरता। वह अपने शरीर से अलग हो जाता है, एक दशा जिसको यीशु "नींद" कहता है। जब यीशु ने बेटी का हाथ पकड़ा और उसको उठने के लिए कहा तो उसका प्राण लौट आए। वह छोटी लड़की कहाँ रही थी? उसका शरीर मृत था और प्रभु और उसके तीन शिष्यों के सामने पलंग पर पड़ा था लेकिन वास्तविक जन, उसकी आत्मा कहीं और थी। क्या आप नहीं जानना चहाते कि उसने क्या अनुभव किया? प्रभु यीशु के अनुसार एक व्यक्ति केवल तब मृत है जब वह मसीह के साथ सम्बन्ध में नहीं आया। (इफ़िसियों २:१,५) वचन में आत्मा और प्राण आपस में एक दूसरे के स्थान पर प्रयुक्त होते प्रतीत होते हैं। पुराने नियम में, (१ राजा १७:१७) एक छोटे लड़के ने साँस लेना बन्द कर दिया (एन. आई. वी. अनुवाद)" इब्रानी भाषा में, यह वस्तुतः यह कहता है कि उसके प्राण ("इब्रानी") चले गए। उसी भाग के २२ पद में हमें बताया गया है कि एलियाह की प्रार्थना के बाद लड़के का प्राण उसमें वापस आ गया। जो इब्रानी शब्द प्रयोग किया गया वह है "नेफ़ेश" जो वस्तुतः यह बताता है कि लड़के का प्राण वापस आ गया।

हमें बताया गया है कि इस क्षण सिद्ध किए हुए धर्मियों की आत्माएं स्वर्ग में हैं (इब्रानीयों १२:२३) और दूसरे स्थान में जब मसीह रैपचर के समय अपनी कलीसिया के लिए लौटेगा "परमेश्वर उन्हें भी जो यीशु में सो गए हैं, उसी के साथ ले आएगा।" (1 थिस्सलुनीकियों ४;१४) उनके शरीर कब्र में थे पर वे स्वयं हमारे स्वाभाव का न दिखने वाला भाग, हमारी आत्मा और प्राण, प्रभु के साथ थे। हम बाद में इस भाग को और नज़दीकी से देखेंगे।

जब एक व्यक्ति मसीह के पीछे आना चाहता था लेकिन पहले अपने पिता के अंतिम संस्कार को पूरा करना चाहता था तो यीशु ने कहा, "मेरे पीछे हो ले और मुरदों को अपने मुरदे गाड़ने दे" (मत्ती ८:२२) मृत लोग अंतिम संस्कार की ज़रूरतों को पूरा नहीं कर सकते। मसीह जो कह रहा था वह यह था कि जो आत्मिक रीति से मरा हुआ है वह अपने पिता के अंतिम संस्कार की व्यस्था करे। शिष्यों के लिए सबसे अनिवार्य बात यह है कि वे मृतक के पास उनके मरने से पहले शुभ–संदेश लेकर पहुँचा।

जब मैं अपनी गाड़ी में बैठता हूँ तो जब तक इंजन शुरू न करुँ तब तक वह मरी हुई है। जब तक मैं उस गाड़ी को नहीं चलाँऊगां वह चलेगी नहीं। उसी प्रकार से मेरा वस्तविक अस्तित्व आत्मा और प्राण से बना हुआ है जो मेरी देह को चलाता है। वस्तविक मनुष्य मृत्यु से आगे जीता है। जीवन में बस इस माँस की देह से बढ़कर भी बहुत कुछ है।

अन्तिम सन्स्कार में हम कुछ दफ़नाते हैं, किसी को नहीं। वह एक किरायेदार नहीं परन्तु एक घर है जिसे कब्र में उतारा जाता है। *वेरना राईट*

1 क्योंकि हम जानते हैं, कि जब हमारा पृथ्वी पर का डेरा सरीखा घर गिराया जाएगा तो हमें परमेश्वर की ओर से स्वर्ग पर एक ऐसा भवन मिलेगा, जो हाथों से बना हुआ घर नहीं परन्तु चिरस्थाई है। (२ कुरिन्थियों ५:१)

कई वर्ष पहले क्रिस्टीन नामक, हमारी एक गर्भवती मित्र, इज़्राइल में रहतीं थीं वह एक गैर यहूदी थीं। उनका गर्भपात हो गया और बहुत खून बहने के कारण वह अपने ही खून के तालाब में लथपथ मर गईं। जैसे ही

उनकी आत्मा ने उनका शरीर छोड़ा वह एकदम से अपने से पहले मरे हुए परिवारजनों सुर मित्रों के जाने–पहचाने चेहरे देखने लगीं। सुकून की महान भावनाओं ने उन्हें भर दिया, वह सब उसके लिए गाने लगे, "क्रिस्टीन आपका घर में स्वागत है।" उनके सम्मुख प्रभु यीशु उनका घर में स्वागत करते खड़े थे। उन्होंने उससे कहा कि वह चुनाव कर सकतीं हैं कि वह वहीं रहें या फिर वापस लौटकर और वह कार्य पूरा करे जो परमेश्वर ने उन्हें करने के लिए दिया था।

उस क्षण उन्होंने अपने पीछे अपने पति की आवाज़ सुनी जो तभी उस कमरे में आए थे जहाँ उनका शव पड़ा था। उन्होंने उसकी नाड़ी जाँची और वह देख सकते थे कि क्रिसटीन पहले ही गुज़र चुकीं थीं। वह बहुत ही पीड़ा में होकर प्रभु को पुकारने लगा प्रभु से माँगते हुए कि उसकी पत्नी को वापस भेज दे। क्रिसटीन ने मुझे बताया कि उसे याद नहीं कि उसने वापस लौटने का निर्णय लिया था या नही लेकिन उसी क्षण वह अपने शरीर में लौट आई, उन्होंने अपनी आँखें खोली और अपने पति से कहा कि वह डरे नहीं परन्तु उसे अस्पताल लेकर जाए। जब दे दोनों अस्पताल पहुँचे तब नर्सों और डॉक्टरों ने उनको खून चढ़ाया और आपस में इस बात पर आश्चर्य करते हुए कि जितनी खून की कमी हुई थी उस के कारण से वह कैसे नहीं मरी। प्रभु बहुत अनुग्रह में आया था और उन्हें और अधिक साल दिए थे इस्राएल में अपना काम पूरा करने के लिए। उन्होंने येरुशलेम, इस्राएल में बहुत आशचर्यकर्म देखे हैं इस दौरान वह अपना पूरा जीवन इस्राएली लोगों की सेवा करते हुए जीती हैं।

४) क्या आपको आपने जीवन में ऐसा समय याद है जब यह संभव है कि आपको अलौकिक मदद मिली ऐसी दुर्घटना से बचने के लिए जिसके परिणाम स्वरूप आपकी मृत्यु हो सकती थी?

15 यहोवा के भक्तों की मृत्यु, उसकी दृष्टि में अनमोल है। (भजन संहिता ११६:१५)

यहोवा के भक्तों (उसके प्रिय जन) की मृत्यु उसकी दृष्टि में अनमोल (खास और कीमती बात) है (भजन संहिता ११६:१५)

५) परमेश्वर अपने लोगों की मृत्यु पर प्रसन्न क्यों होगा, वे लोग जिन्होंने अपना जीवन उसको सौंप दिया है?

परमेश्वर हमारी मृत्यु पर कैसे खुश हो सकता यदि जो कुछ होता है वह है केवल सो जाना? यदि हम मृत्यु के समय बेसुध होते हैं तो यीशु ने क्रूस पर कुकर्मी/ चोर से यह बातें क्यों कहीं? (उस ने उस से कहा, मैं तुझ से सच कहता हूं; कि आज ही तू मेरे साथ स्वर्गलोक में होगा॥ (लूका २३:४३) उसने यह नहीं कहा, समय के अन्त में एक अच्छी नींद सो लेने के बाद तुम मेरे साथ स्वर्गलोक में होगे। यह स्पष्ट है कि यीशु सिखा रहा था कि दिन के अन्त होने से पहले वह मनुष्य जीवित होगा और यीशु के साथ स्वर्गलोक में होगा।

जो बहुत अच्छे नहीं हैं क्या उनके लिए कोई बीच का स्थान है?

बाईबिल क्यों एक मधयम स्थान परगेटोरी के विषय में बिल्कुल चुप है?

कैथोलिक इन्साईकलोपीडीया के अनुसार परगेटोरी उन लोगों के लिए कुछ समय की सज़ा का स्थान या दशा है, जो परमेश्वर के अनुग्रह से इस जीवन से जा रहें हैं लिकिन अपनी गलतियों से पूरी तरह आज़ाद नहीं हैं या उन्होंने पूरा दाम नहीं चुकाया, संक्षेप में कैथोलोक थीयोलोजी में पर्गटोरी वह स्थान है जहाँ एक मसीही जन की आत्मा जाती है उन पापों से शुद्ध होने के लिए जिनको जीवन में सम्पूर्णता से दाम नहीं दिया गया। क्या यह पर्गटोरी की शिक्षा बाईबिल से मेल खाती है? बिलकुल नहीं।

यीशु हम सबके पापों का दाम चुकाने के लिए मरा। (रोमियों ५:८)

यशायाह ५३:५ कहता है
5 परन्तु वह हमारे ही अपराधो के कारण घायल किया गया, वह हमारे अधर्म के कामों के हेतु कुचला गया; हमारी ही शान्ति के लिये उस पर ताड़ना पड़ी कि उसके कोड़े खाने से हम चंगे हो जाएं।

यीशु ने हमारे पापों के लिए दुख सहा ताकि हम पीड़ा से बचाए जा सकें। यह कहना कि हमें भी अपने पापों के लिए पीड़ा सहनी है का अर्थ है कि यीशु का दुःख सहना काफ़ी नहीं था। यह कहना कि परगेटोरी में शुद्ध होकर हमें अपने पापों का प्रायश्चित करना यीशु के पाप के लिए बलिदान का तिरिस्कार करना है। (१ यहुन्ना २:२) यह विचार कि हमें मृत्यु के बाद अपने पापों के लिए पीड़ा सहनी है उस हर बात के विरोध में है जो बाईबिल उद्धार के बारे में कहती है।

क्योंकि उस ने एक ही चढ़ावे के द्वारा उन्हें जो पवित्र किए जाते हैं, सर्वदा के लिये सिद्ध कर दिया है। (इब्रानियों १०:१४)

<u>कभी–कभी लोग जाते हुए दो संसारों को देख पाते हैं।</u>

कभी–कभी जब लोग मर रहे होते हैं तो उनकी आत्मा अक्सर पृथ्वी और स्वर्ग के बीच में घूमती है है जहाँ वे दोनों दुनिया देख सकते है। प्रचारक ड्वाईट एल. मूडी ने मरने से कुछ घंटों पहले उस महिमा की झलक देखी जो उनके इंतज़ार में थीं।
नींद से जागते हुए, उन्होंने कहा"

"पृथ्वी छोटी हो रही है, स्वर्ग मेरे सामने खुल रहा है। यदि यह मृत्यु है, यह अच्छी है। यहाँ कोई घाटी नहीं है। परमेश्वर मुझे बुला रहा है और मुझे जाना है!" उनका पुत्र जो उनके पलंग के पार खड़ा था बोला, "नहीं, नहीं पिताजी आप सपना देख रहे हैं।" श्र० मूडी ने कहा, "नहीं मैं सपना नहीं देख रहा हुँ। मैं द्वार के भीतर गया हूँ। मैंने बच्चों के चेहरे देखे हैं।" थोड़ा सा समय बीता और फिर उस समय के बाद जो कि परिवार वालों को मृत्यु का संघर्ष सा प्रतीत हुआ, वे फिर बोले "यह मेरी जीत है। यह मेरा मुकुट पाने का दिन है। यह महिमामय है।"

कुछ लोग कहेंगे कि मूडी सपना देख रहे थे परन्तु वचन हमें उस जन के बारे में बताता है जिसने मृत्यु के समय दोनों संसारों को देखा। हम स्तिफ़नुस (स्तीफ़न) की बात कर रहें हैं। यह घटना उसके बाद घटी जब उसने कुछ लोगों के साथ सुसमचार बाँटा जो मसीहियों को सता रहे थे।

54 ये बातें सुनकर वे जल गए और उस पर दांत पीसने लगे। 55 परन्तु उस ने पवित्र आत्मा से परिपूर्ण
होकर स्वर्ग की ओर देखा और परमेश्वर की महिमा को और यीशु को परमेश्वर की दाहिनी ओर खड़ा
देखकर। 56 कहा; देखों, मैं स्वर्ग को खुला हुआ, और मनुष्य के पुत्र को परमेश्वर के दाहिनी ओर खडा हुआ
देखता हूं। 57 तब उन्होंने बड़े शब्द से चिल्लाकर कान बन्द कर लिए, और एक चित्त होकर उस पर
झपटे। 58 और उसे नगर के बाहर निकालकर पत्थरवाह करने लगे, और गवाहों ने अपने कपड़े उतार
रखे।59 और वे स्तिुफनुस को पत्थरवाह करते रहे, और वह यह कहकर प्रार्थना करता रहा; कि हे प्रभु यीशु,
मेरी आत्मा को ग्रहण कर। 60 फिर घुटने टेककर ऊंचे शब्द से पुकारा, हे प्रभु, यह पाप उन पर मत लगा,
और यह कहकर सो गया॥
(प्रेरितों के काम ७:५४–६०) (ज़ोर मैने दिया है)

क्या हम सचमुच ऐसा विश्वास कर सकते हैं कि स्तिफ़नुस, परमेश्वर के जन ने यह देखने के बाद कि यीशु उसे लेने आया है एक बेसुध नींद में पड़ गया? परमेश्वर सोए हुओं का परमेश्वर नहीं है। हम कब्र पर अपनी देह से अलग हो जाते हैं परन्तु हम में से हर एक मृत्यु के आगे भी जीते हैं। मैं विश्वास करता हूँ कि वचन सिखाता है कि अनन्तकाल हम में से हर एक के लिए मृत्यु के स्थान से शुरू होता है। क्या यही बात यीशु ने अब्राहम, इशाक और याकूब के लिए नहीं कही?

26 मरे हुओं के जी उठने के विषय में क्या तुम ने मूसा की पुस्तक में झाड़ी की कथा में नहीं पढ़ा, कि
परमेश्वर ने उस से कहा, मैं इब्राहीम का परमेश्वर, और इसहाक का परमेश्वर, और याकूब का परमेश्वर हूं?
27 परमेश्वर मरे हुओं का नहीं, वरन जीवतों का परमेश्वर है: सो तुम बड़ी भूल में पड़े हो॥
(मरकुस १२:२६–२७)

प्ररित पौलूस ने लिखा" देह में न होना प्रभु के साथ होना है।" (२ कुरिन्थियों ५:८) वह फिलिप्पियों की कलीसिया को भी अपने मरने और मसीह के साथ होने की इच्छा के बारे में लिखते हैं।"

22 पर यदि शरीर में जीवित रहना ही मेरे काम के लिये लाभदायक है तो मैं नहीं जानता, कि किस को
चुनूं। 23 क्योंकि मैं दोनों के बीच अधर में लटका हूं; जी तो चाहता है कि कूच करके मसीह के पास जा
रहूं, क्योंकि यह बहुत ही अच्छा है। 24 परन्तु शरीर में रहना तुम्हारे कारण और भी आवश्यक है।
(फिलिप्पियों १:२२–२४) (ज़ोर मैने दिया है)

ध्यान दें कि पौलुस यह अपक्षा नहीं कर रहा है कि जब वह मरे तब नींद में बेसुध हो, वह पूरी रीति से जीवित होने की आशा रखता है। वह इसे बहुत ही बेहतर कहता है। २३ पद में कूच करके शब्द युनानी शब्द से अनुवाद किया गया है जिसका प्रयोग लंगर को ढीला करने के लिए किया जाता था। ए.टी. रोबर्ट्सन इसको

इस तरह से समझाते हैं, “लंगर का अनुमान लगाना और समुद्र में डालना।” यदि पौलुस अपने आपको दो हज़ार वर्षों के लिए सोने के किए तैयार कर रहा था तो मैं नहीं समझ सकता कि इसे “बहुत बेहतर” कैसे कहा जा सकता है। विक्टर हयुगो ने एक बार लिखा: “जब मैं कब्र में जाऊँगा तो बहुतों की तरह मैं यह कह सकता हूँ: मैंने अपना कार्य पूरा कर लिया है पर मैं यह नहीं कह सकता कि मैंने अपना जीवन पूरा कर लिया है। मेरे दिन का कार्य अगली सुबह शुरू होगा। मेरी कब्र एक ऐसी अंधेरी गली नहीं है। यह एक खुला रास्ता है। यह भोर में खुलने के लिए साँझ में बंद होता है।”

रुथ ग्राहम बेल अपनी पुस्तक "लेगेसी ऑफ़ अ पैक रैट" में नॉर्थ कैरोलाईना, मॉन्ट्रीट के पासबान हमफ्री आर्मीस्टेड की दादी की सच्ची कहानी बताते है":

कमरा शान्त और कुछ अंधेरा सा था। एक वृद्ध महिला तकियों के सहारे लेटकर अपने पुत्र रॉबर्ट की बातें सुन रही थीं जो परिवार, उनके मित्रों और जो बातें उन्हें भाती थीं, उस विषय में थीं। वह रोज़ उनके आने का रस्ता ताकती थीं। मैडीसन जहाँ वह रहते थे वह नेशविल से दूर नहीं था और रॉबर्ट जितना हो सकता था उतना समय अपनी माँ के साथ बिताते थे यह जानते हुए कि जितनी बीमार वह हैं, उनकी हर भेंट आखरी भेंट हो सकती है। जब वह बात करते उनकी आँखे उनके प्यारे चेहरे को बहुत ध्यान से देखती हर लकीर को और अब उनके चहरे पर बहुत अधिक लकीरें थीं – सफ़ेद बाल, थकी हुई लेकिन अभी भी प्रेम करनेवाली आँखे। जब जाने का समय हुआ तो उन्होंने कोमलता से उनको माथे पर चूमा, उनको भरोसा दिलाते हुए कि अगले दिन वह फिर आएँगे। मैडीसन में अपने घर लौटकर उन्होंने पाया कि उनका सत्रह वर्ष का बेटा रॉबिन अजीब से बुखार से पीड़ित था। उनके अगले कुछ दिनो का समय उनके बेटे और उनकी माँ के बीच में उलझकर रह गया। उन्होंने अपनी माँ को रॉबिन की बीमारी के बारे में नहीं बताया। वह उनका सबसे बड़ा पोता था – उनके जीवन का गर्व और खुशी। फिर अचानक से रॉबिन गुज़र गया। उसकी मृत्यु से पूरे समुदाय और साथ ही उसके परिवार को झटका लगा। यह सब बहुत जल्दी से हो गया। और सत्रह की उमर में मरना बहुत शीघ्र था।

जैसे ही दाह–सन्स्कार खत्म हुआ, श्री० आर्मिस्टेड जल्दी से अपनी माँ के पलंग के पास गए यह प्रार्थना करते हुए कि उनके हाव–भाव से यह न पता चल जाए कि वे अभी–अभी अपने पहिलौठे को दफ़ना कर आ रहें हैं। जिस अवस्था में उनकीं माँ थीं उसमें उनके लिए यह बात सहन करना असंभव हो जाता। डॉक्टर कमरे में ही थे जब उन्होंने प्रवेश किया। उनकी माँ आँखें बन्द करके लेटी हुई थीं। डॉक्टर ने धीरे से कहा, "वह कोमा में हैं"। उनका विश्वासयोज़ रीति से अपनी माँ को देखने आना, उनके पुत्र की मृत्यु, वह दाह–सन्स्कार जिससे वह अभी अभी आए थे। डॉक्टर इन सब बातों से अवगत थे। सहानुभूति के लिए डॉक्टर ने अपना हाथ श्री० आर्मिस्टेड के कंधे पर रखा। उसने कहा, बस उनके पास बैठो, शायद वह होश में आ जाएँ और उसने उन दोनों को साथ छोड़ गिया। उस शाम के समय श्री० आर्मिस्टेड का ह्रिदय बोझिल था। उन्होंने पलंग के पास रखा लैम्प जलाया और कमरे में रोशनी हो गई। जल्द ही उनकी माँ ने अपनी आँखें खोली और पहचानकर मुसकुराते हुए अपना हाथ अपने बेटे के घुटने पर रख दिया। उन्होंने प्यार से उनका नाम लिया बॉब .. और फिर कोमा में चली गईं। चुपचाप से श्री० आर्मिस्टेड बैठे रहे, उनका हाथ इनके हाथों में, इनकी आँखें उनके चेहरे पे टिक–टिकी बाँधे लगी हुईं।। कुछ देर के बाद उनकी माँ ने कुछ प्रक्रिया दिखाई। उनकी माँ की आँखें खुली थीं और उनमें ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे कि वह कमरे से कहीं आगे देख रही हों। उनके चेहरे पर एक आश्चार्य की झलक थी। उन्होंने खुशी से कहा , मैं यीशु को देख रही हूँ और वहाँ पापा और मम्मी

भी हैं और फिर वहाँ रॉबी भी है। मुझे नही पता था कि रॉबी मर गया था। उन्होंने कोमलता से अपने पुत्र के घुटने पर थपथपाया फिर कहा। "बेचारा बॉब".... और फिर गुज़र गईं।
वह कैसे जान पई कि रॉबी मर गया था यदि उन्होंने उसे न देखा होता? उन्होंने उसे देखा जब इस शारीरिक देह का घर छोड़े जा रहीं थीं। मृत्यु एक ग्रेजुएशन डे है।

जब वे मृत्यु के फटक पर पहुँचते हैं, परमेश्वर उनका स्वागत करता है जो उससे प्रेम करते हैं। (भजन संहिता ११६:१५)

प्रार्थना: प्रभु हमारी सहायता कर कि हम अपने प्रतिदिन के जीवन को इस ज्ञान के साथ जी सकें कि एक दिन हम तुझे देखेंगें और हमारी मदद कर कि जो समय तूने हमें दिया है उसे हम अपने आप को अनन्तकाल के लिए तैयार करने में लगा सकें। हमें ऐसी आँखें दे कि हम देख सकें कि क्या सचमुच में ज़रूरी है, जब हम इस जीवन को जीते हैं, आनेवाले जीवन की आशा में। अमीन॥